इकाई 27 महाभारत की ऐतिहासिकता

इकाई की रूपरेखा

27.1 उद्देश्य

27.2 प्रस्तावना

27.3 महाभारत की ऐतिहासिकता

- 27.3.1 महाभारत की ऐतिहासिकता विषयक अवधारणा का विश्लेषण
- 27.3.2 महाभारत का रचनाक्रम एवं स्वरूप
  - 27.3.2.1 महाभारत का स्वरूप
- 27.3.3 महाभारत का रचनाकाल : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में
- 27.3.4 महाभारतकालीन स्थलों को ऐतिहासिक समीक्षा
- 27.3.5 विभिन्न ग्रन्थों में महाभारत के उद्धरण एवं महाभारत का उपजीव्यत्व
  - 27.3.5.1 प्राचीन ग्रन्थकारों द्वारा उद्धृत महाभारत

27.4 सारांश

27.5 शब्दावली

27.6 अभ्यास हेतु प्रश्न

27.7 अभ्यास हेतु प्रश्नों के उत्तर

27.8 उपयोगी पुस्तकें

27.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के समग्र अध्ययन से आप को महाभारत की ऐतिहासिकता से सम्बन्धित अनेक बिन्दुओं का बोध होगा–

- महाभारत के प्रतिपाद्य विषय
- भारतीय परम्परा में इतिहास–पुराण की अवधारणा
- महाभारत की ऐतिहासिकता विषयक समस्याएँ एवं समाधान
- महाभारत का विशिष्ट रचनाक्रम एवं रचनाकाल
- महाभारत में वर्णित ऐतिहासिक स्थलों की प्रामाणिकता
- महाभारत का परवर्ती साहित्य पर प्रभाव

27.2 प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति के आधारभूत ग्रन्थों में महाभारत का विशिष्टतम स्थान है। रामायण की ही भाँति महाभारत को भी आर्षकाव्य के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। वैश्विक साहित्य में आकार की दृष्टि से सबसे बृहत् स्वरूप महाभारत का ही है। महाभारत को मानवीय जीवन के लिए आचार–शास्त्र माना जाता है। जिसमें पुरुषार्थचतुष्टय का समग्रता में प्रतिपादन, आचार संहिता, कर्तव्याकर्तव्य–विवेक जैसे विषयों का सरलतापूर्वक प्रस्तुतीकरण किया गया है। महाभारत अपने बृहत् स्वरूप के साथ–साथ विषयवस्तु को

व्यापकता की दृष्टि से भी इतना विशिष्ट है कि तत्कालीन उपलब्ध सभी विषयों का समावेश इसमें किया गया है। इसलिए लोक में यह उक्ति भी प्रचलित है कि 'यन्न भारते तन्न भारते' अर्थात् जो विषय महाभारत में वर्णित नहीं है वह भारतवर्ष में भी उपलब्ध नहीं है, इसका अभिप्राय यह है कि भारतवर्ष में व्याप्त सभी विषयों का निरूपण महाभारत में कर दिया गया है। महाभारत के प्रणेता वेदव्यास (कृष्ण द्वैपायन) ने स्वयं इस बात का उल्लेख करते हुए कहा है कि

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।[1]

उनका अभिप्राय है कि धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित सम्पूर्ण चर्चा जो यहां (महाभारत) में उपलब्ध होती है वही अन्यत्र भी उपलब्ध है, जो यहां उपलब्ध नहीं है वह अत्यत्र भी उपलब्ध नहीं हो सकती।

भारतीय परम्परा में महाभारत को ऐतिहासिक महाकाव्य के रूप में मान्यता प्राप्त है। भारतीय वाङ्मय का यह वैशिष्ट्य रहा है कि सभी ज्ञान–विज्ञानमय चर्चाओं, आख्यानों, वृत्तान्तों को छन्दोबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है। इसी श्रृंखला में रामायण एवं महाभारतकाल में घटित वृत्तान्तों का प्रस्तुतीकरण भी छन्दोमय शैली में ही हुआ है जिस कारण से इन्हें महाकाव्य की विधा में अत्यन्त आहत माना जाता है। इसके साथ–साथ क्योंकि इनके रचयिता वाल्मीकि एवं व्यास स्वयं उस समय विद्यमान थे एवं उन्होने ही तत्कालीन वृत्तान्त को छन्दोबद्ध किया इसलिए इन दोनों आर्ष महाकाव्यों को 'इतिहास' के रूप में भी प्रतिष्ठा प्राप्त है।

प्रसंगानुसार यहाँ पर इतिहास शब्द की चर्चा करनी भी आवश्यक है। संस्कृत वाङ्मय में इतिहास–पुराण इन दोनों शब्दों का एक साथ प्रयोग देखा जाता है।[2]

शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय आरण्यक तथा छन्दोग्य उपनिषद् में भी इनका प्रयोग हुआ है। शतपथ ब्राह्मण आदि ग्रन्थों के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि आख्यानात्मक स्थलों के अर्थ में इतिहास–पुराण शब्दों का प्रयोग किया जाता था, सम्भवतः अलग से किन्हीं इतिहास ग्रन्थों का अस्तित्व न रहा हो।

बृहदारण्यक उपनिषद् तथा शतपथ ब्राह्मण में इतिहास शब्द का प्रयोग उर्वशी तथा पुढरवा के संवाद के लिए हुआ है तथा पुराण शब्द का प्रयोग उन वर्णनों के लिए हुआ है जो ब्राह्मण से सम्बन्धित थे।[3] कालक्रम से इतिहास एवं पुराण की परिभाषा एवं भिन्नता व्यवस्थित हुई जिसमें दिव्य गाथाएं पुराण मानी गई एवं 'इति+ह्+आस' इस परिभाषा के आधार पर (ऐसा हुआ था) मनुष्यों की गाथाएँ इतिहास के रूप में स्वीकृत की जाने लगी।

इतिहास एवं पुराण की परिभाषाओं को महाभारत के प्रसंग में इस प्रकार से समझा जा सकता है–

---

[1] म.भा. आदिपर्व– 1.62.52
[2] इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृहयेत्। म.भा. आदिपर्व– 1/2/67
[3] इतिहास इत्युर्वशी पुरुरवसोः संवादादि उर्वशी प्रप्सरा इत्यादि ब्राह्मणेव पुराणम् सदा इदमग्रे आसीदित्यादि। बृहदारण्यक उपनिषद् 2.4.10

महाभारत के प्रणेता को नाग, गन्धर्व, यज्ञ आदि की कथाओं का भी पूर्ण ज्ञान है वहीं कुरुवंशी योद्धाओं की गाथा अर्थात् इतिहास भी विस्तार से वर्णित है। इनमें एक का सम्बन्ध अद्भुत, अलौकिक घटनाओं से है तो दूसरे का भौतिक जगत् की प्रत्यक्ष लौकिक गाथाओं से। मानव के कल्पना से यर्थार्थ की ओर प्रमाण का विकासक्रम ही पुराण से इतिहास को विद्या की ओर ले जाता है। इसीलिए महाभारत को ऐतिहासिक महाकाव्य की श्रेणी में रखा जाता है।

प्रस्तुत इकाई में महाभारत की ऐतिहासिकता विषयक अवधारणा पर विस्तार से विचार किया जायेगा, जिससे छात्रों में इस विषय को लेकर एक परिपक्व दृष्टि विकसित हो सके।

27.3 महाभारत की ऐतिहासिकता

प्रस्तुत इकाई के शीर्षक से स्पष्ट है कि इसमें महाभारत से सम्बन्धित विविध विषयों पर विचार किया जायेगा।

प्रस्तावना में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि भारतीय परम्परा महाभारत को इतिहास काव्य के रूप में भी स्वीकार करती है।

अग्रिम चर्चा में महाभारत के ऐतिहासिक पक्ष से सम्बन्धित सभी बिन्दुओं पर एक समग्र एवं सर्वांगीण विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा।

27.3.1 महाभारत की ऐतिहासिकता विषयक अवधारणा का विश्लेषण

यह विमर्श आरम्भ करने से पहले महाभारत की ऐतिहासिकता की अवधारणा पर एक संक्षेप दृष्टिपात करना आवश्यक है। बौद्धिक जगत् में यह एक विचारणीय बिन्दु रहा है कि महाभारत इतिहास है अथवा काल्पनिक ग्रन्थ है। अधिकृत विद्वानों ने इस विषय पर भिन्न–भिन्न आधार बनाकर अपने मत व्यक्त किए हैं।

भारतीय परम्परा के पोषक लोग महाभारत को इतिहास के रूप में स्वीकार करते हैं परंतु अन्य लोग इसके सर्वथा विपरीत महाभारत को नितान्त काल्पनिक ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्रदान करते हैं। अतएव इसका उचित विश्लेषण आवश्यक है। महाभारत का अनुशीलन करते हैं तो ज्ञात होता है कि महाभारत के प्रणेता व्यास ने इसे स्वयं इतिहास की संज्ञा ही है–

भारतस्येतिहासस्य पुण्यां ग्रन्थार्थसंयुताम्।
संस्कारोपगतां ब्राह्मीं नानाशास्त्रोप बृंहिताम्।।

आचख्यु कवयः केचित् संप्रत्याचक्षते वरे।
आख्यास्यन्ति तथैवान्ये इतिहासमिमं भुवि।।[4]

यहां पर स्वयं भास ने महाभारत को भारतवंशियों का पुण्य इतिहास कहा है। 'इतिहास' शब्द का अभिप्राय है 'इति+ह्+आस' अर्थात् ऐसा हुआ था। पूर्व में घटित घटनाओं का सम्यक् विवरण एवं प्रस्तुतीकरण ही इतिहास माना जाता है।

[4] म.भा. आदिपर्व– 1/1/17,24

उदाहरण की दृष्टि से अगर विचार करें तो कृष्ण को ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। बुद्ध के बाद का भारत इतना सुपरिचित है कि कृष्ण को बुद्ध के बाद का नहीं बताया जा सकता। बुद्ध का समय प्रायशः पांचवीं–छठी ईसा पूर्व निर्धारित किया जाता है, इससे कृष्ण निश्चित तौर पर छठी शताब्दी ईसा पूर्व हुए होंगे।

महाभारत में यवनों, रोमकों एवं हूणों का भी वर्णन आता है, जबकि हूणों का उदय ही भारतीय क्षितिज पर चतुर्थ शताब्दी में हुआ है। इससे यह भी पता चलता है कि महाभारत में घटित घटनाओं तथा वर्णित घटनाओं में काल की दृष्टि से पर्याप्त अन्तर रहा है। इसकी पुष्टि अग्रिम चर्चा में भी होगी जब महाभारत के रचनाक्रम की बात करेंगे, जिसमें जय, भारत तथा महाभारत तक की यात्रा का पूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया जायेगा। यद्यपि महाभारत वर्तमान स्वरूप में अनेक कल्पनाओं का है सम्मिश्रण किया गया है परन्तु मूल कथा जिसमें कौरव–पांडवों तथा कृष्ण आदि पात्रों का तत्कालीन घटित घटनाओं का वर्णन है, वह निश्चित रूप से इतिहास स्वरूप ही रही होगी। इसलिए महाभारत को शब्दशः काल्पनिक स्वीकार करने वाले मतों को अस्वीकार करना ही योग्य है।

आगामी चर्चा में अनेक साक्ष्यों के द्वारा इस तथ्य को सिद्ध करने तथा स्थापित करने का प्रयास किया जायेगा।

27.3.2 महाभारत का रचनाक्रम एवं स्वरूप

महाभारत को 'शतसाहस्री' संहिता के नाम से संबोधित किया गया है। शतसाहस्री का अभिप्राय है सौ हजार अर्थात् एक लाख श्लोकों वाली संहिता। महाभारत का वर्तमान स्वरूप 1 लाख श्लोकों वाला है इसलिए महाभारत को शतसाहस्री संहिता के नाम से जाना जाने लगा।

यहां पर सर्वप्रथम यह विचारणीय है कि क्या महाभारत आरम्भ से इसी रूप में रहा है? शोधकर्ताओं का मन्तव्य है कि महाभारत को एक ही काल में एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं लिखा गया है। आरम्भ में जो मूल कथा संक्षिप्त रूप में थी वह कालक्रम से विकसित होती चली गई तथा अन्त में शतसाहस्री संहिता के रूप में वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हो गई। विद्वत्समुदाय में महाभारत का संरचनात्मक क्रम इस प्रकार से स्वीकार किया गया है–

सर्वप्रथम महाभारत का प्रणयन वेदव्यास ने 'जय' नाम से किया था, जिसमें कुरुवंश के योद्धाओं का साक्षात् वर्णन किया गया था। वेदव्यास कौरव–पाण्डवों के समकालीन रहे, उन्होंने तत्कालीन घटनाओं का जीवन्त पद्यमय वृत्तान्त प्रस्तुत किया। इसीलिए 'जय' को आर्षकाव्य के साथ–साथ इतिहास काव्य की श्रेणी में भी रखा गया। यद्यपि 'जय' के विकासक्रम में उसमें अनेक आख्यानों का सम्मिश्रण हुआ तब भी महाभारत का मूल स्वरूप इतिहास ही बना रहा। महाभारत के आरम्भिक नाम की पुष्टि स्वयं महाभारत के अनुशीलन से हो जाती है–

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।
जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतव्यों विजिगीषुणा।।[5]

[5] म.भा. आ. पर्व 1/62/20

व्यास रचित इस जय नामक इतिहास काव्य का निबन्धन 8800 श्लोको में किया गया था, जैसा कि निम्न श्लोक में स्पष्ट रूप से बतलाया गया है–

अष्टौ श्लोकसहस्त्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च।
अहं वेद्मि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा।।[6]

'जय' के बाद इस विकासक्रम में 'भारत' यह स्वरूप प्राप्त होता है। 'भारत' 24 हजार श्लोकों में निबद्ध है। 'भारत' का निबन्धन उपाख्यानों के बिना ही किया गया था, जिसका संकेत वहीं पर प्राप्त होता है–

चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे भारतसंहिताम्।
उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः।।[7]

भारत का प्रवचन वैशम्पायन ऋषि ने जनमेजय के समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर किया था। जनमेजय ने व्यास से कौरव–पाण्डयों के वृत्तान्त को सुनाने का निवेदन किया तो व्यास ने अपने शिष्य वैशम्पायन को निर्देश दिया कि 'जय' महाकाव्य का वाचन करे। जिस समय वैशम्पायन 'जय' महाकाव्य का वाचन कर रहे थे तो जिज्ञासा वशात् जनमेजय अपने मनोगत प्रश्न वैशम्पायन के समक्ष रखने लगे। वैशम्पायन ने सहजभाव से सभी प्रश्नों का समाधान किया। इस पूरे संवाद को भी 'जय' मे मिला दिया गया जिससे 'जय' के बाद इस महाकाव्य को 'भारत' नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। भारत में कौरव पाण्डवों के वृत्तान्त का वर्णन तो था ही अन्य सम्बद्ध घटनाओं का वर्णन भी किया गया था।

इसी क्रम में भारत के बाद शतसाहस्री संहिता महाभारत अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त करता है। एक लाख श्लोकों में निबद्ध यही महाभारत अद्यावधि हमें उपलब्ध होता है।

नैमिषारण्य[8] में शौनक ऋषि ने एक द्वादश वार्षिक यज्ञ का आयोजन किया था, इस यज्ञ के प्रवक्ता सौति ऋषि थे। सौति ऋषि ने वैशम्पायन से सुने हुए भारत संहिता को परिवर्तित करके वहां उपस्थित शौनक आदि ऋषियों को सुनाया। 12 वर्षों तक निरन्तर चले इस अनुष्ठान में उपस्थित श्रोताओं ने अपनी जिज्ञासाएं भी सौति ऋषि के समक्ष रखी, जिसका यथोचित समाधान उन्होंने किया। इस सम्पूर्ण संवाद को भी 'भारत' के मूल स्वरूप को बिना क्षति पहुंचाये उसी में सम्मिश्रित कर दिया गया। इन उत्कृष्ट ज्ञानप्रद संवादों में धर्म, अध्यात्म, इतिहास भूगोल, आख्यान, नीतिशास्त्र, आचार, विचार आदि समस्त सांस्कृतिक विषयों को समाहित किया गया। जिससे यह भारतवर्ष के विश्वकोष के रूप में विख्यात हो गया। इसके 'महाभारत' नामकरण के पीछे विशाल आकार होना भी एक कारण है–

महत्त्वाद् भारवत्त्वाच्च महाभारतमुच्यते।[9]

डॉ० सुक्थंकर के अनुसार महाभारत के यथोचित निबन्धन अथवा संकलन का कार्य भृगुवंशी ब्राह्मणों ने किया था। महाभारत के अनेक उपाख्यानों का सम्बन्ध स्पष्ट रूप

[6] वही 1/1/81
[7] म.भा. आ. पर्व 1.102.3
[8] वर्तमान में उत्तरप्रदेश स्थित सीतापुर जनपद।
[9] महा. भा. 1.1.274

से भृगुवंशियों के साथ है जैसे आदिपर्व में और्व, वनपर्व में कार्तवीर्य, उद्योगपर्व में अम्बोपाख्यान आदि।

आदिपर्व में सौति द्वारा जोड़े गये आरम्भिक साठ अध्यायों में से 53 अध्यायों में भृगुवंशियों का ही वर्णन है, शौनक स्वयं भी भार्गव ही थे, उन्होंने ही भृगुवंश की कथा सुनने की इच्छा व्यक्त की थी।[10]

जयसंहिता के तृतीय संस्करण अर्थात् महाभारत को कृष्ण की कथा से सुशोभित करने के लिए परिशिष्ट के रूप हरिवंश पर्व भी जोड़ा गया। मानवीय जीवन के सभी विषयों का समावेश करने के लिए अनेक आख्यानों का समन्वयन किया गया। इस दीर्घ प्रक्रिया के कारण ही महाभारत विश्व के विशालतम ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है।

महाभारत के इस विकासक्रम को निष्कर्ष रूप में कहा जाये तो आरम्भ में व्यास ने जयसंहिता की रचना की, जिसके बाद वैशम्पायन एवं सौति ने क्रमशः भारत तथा महाभारत के रूप में इसका विस्तार किया। महाभारत का यह विकासक्रम विद्वत्समाज में सर्वसम्मति से स्वीकृत किया जाता है।

महाभारत के विकासक्रम पर विस्तृत चर्चा करने के पश्चात् महाभारत के स्वरूप पर दृष्टिपात करना भी आवश्यक है।

27.3.2.1 महाभारत का स्वरूप

वर्तमान महाभारत अठारह पर्वों में विभक्त है। यहां पर उन सभी पर्वों का नाम एवं उनकी विषयवस्तु का संकेत रूप में विवरण देने का प्रयास किया जा रहा है।

आदि पर्व– यह महाभारत का प्रथम पर्व है, इसमें 19 उपपर्व तथा 233 अध्याय है। आरम्भिक पर्वों में अनुक्रमणिका, पर्वसंग्रह तथा जनमेजय के नागयज्ञ की पृष्ठभूमि का वर्णन है। तदनन्तर शकुन्तला आख्यान एवं पुरुवंश के राजाओं का वर्णन है। कौरव पाण्डवों के जन्म तथा शिक्षा–दीक्षा का वर्णन भी इसी पर्व में है।

सभा पर्व– यह महाभारत का दूसरा पर्व है। यह पर्व 81 अध्यायों तथा 10 उपपर्वों में विभक्त है। इस पर्व में विशेष रूप से पाण्डवों की दिग्विजय यात्रा, जरासन्ध वध, युधिष्ठिर द्वारा राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान, शिशुपाल वध तथा द्यूतवृत्त वर्णित है। पाण्डवों के वनवास एवं अज्ञातवास का वर्णन भी इसी पर्व में है।

वन पर्व – यह महाभारत का तृतीय पर्व है। इस पर्व को 315 अध्यायों तथा 22 उपपर्वों में निबद्ध किया गया है।

विराट पर्व– यह पर्व पांच उपपर्व तथा 72 अध्यायों में विभाजित है। इसमें विशेष रूप से पाण्डवों के अज्ञातवास का वर्णन है। अन्तिम उपपर्व (वैवाहिक) में विराट की पुत्री उत्तरा का अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के साथ विवाह का वर्णन है।

उद्योग पर्व– इस पर्व में दस उपपर्व तथा 196 अध्याय हैं। इस पर्व में महाभारत युद्ध की पूर्वपीठिका है। कौरव–पाण्डवों द्वारा युद्ध की तैयारी, कृष्ण द्वारा शान्ति के प्रयास आदि का विस्तृत वर्णन है।

[10] तत्र वंशमहं पूर्व श्रोतुमिच्छामि भार्गवम्। म.भा.

भीष्म पर्व– यह पर्व पांच उपपर्वों तथा 112 अध्यायों में विभक्त है। इस भाग में प्रमुख रूप से युद्ध के आरम्भ होने से पूर्व की घटनाओं के साथ–साथ भीष्म के सेनापतित्व के 10 दिनों के महाभारत युद्ध का वर्णन है।

द्रोण पर्व– इस पर्व में आठ उपपर्व तथा 202 अध्याय हैं। यह पर्व महाभारत युद्ध की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। द्रोण के सेनापतिकाल में घटित घटनाओं का विस्तृत वर्णन है। अभिमन्यु, घटोत्कच, जयद्रथ आदि योद्धाओं की मृत्यु इसी पर्व में होती है।

कर्णपर्व– यह पर्व उपपर्वों में विभक्त नहीं है। इसमें 16 अध्याय हैं। इस पर्व में कर्ण के सेनापतित्व में घटित घटनाओं का वृत्तान्त है।

शल्य पर्व– यह एक संक्षिप्त पर्व है। इसमें दो उपपर्व तथा 65 अध्याय हैं। शल्य कौरवों के अन्तिम सेनापति थे, जिनके नेतृत्व में अन्तिम दो दिनों का युद्ध हुआ। इसी पर्व में प्रमुख रूप से शल्य एवं दुर्योधन के वध का वर्णन है।

सौप्तिक पर्व– इस पर्व में एक उपपर्व तथा 18 अध्याय हैं। इस पर्व में प्रमुख रूप से अश्वत्थामा द्वारा पाण्डुपुत्रों की हत्या तथा इस हत्या के समाचार को सुनकर दुर्योधन द्वारा प्राण त्यागने का वर्णन है। इसी पर्व में अपने पुत्रों की हत्या के प्रतिशोध में पाण्डव अश्वत्थामा को पकड़कर दण्ड देते हैं।

स्त्री पर्व– इस पर्व में 3 उपपर्व हैं। इसमें मुख्यतः कुन्ती द्वारा कर्ण के जन्म सम्बन्धी रहस्यों का उद्घाटन किया जाना है तथा गान्धारी द्वारा कृष्ण को कौरवों के नाश का कारण मानकर यदुवंशियों के समूल नाश का श्राप दिये जाने का वर्णन है।

शान्ति पर्व– यह पर्व महाभारत के सबसे बड़े पर्व के रूप में जाना जाता है। कतिपय विद्वानों का मन्तव्य है कि संभव है कि मूलग्रन्थों (जय तथा भारत) में यह पर्व लघुकाय रहा होगा तथा बाद में इसमें कुछ स्थल जोड़े गये होंगे। इस पर्व में तीन उपपर्व तथा 365 अध्याय हैं। इसमें राजधर्म, वर्णधर्म आश्रम धर्म, दण्डनीति एवं आपद्धर्म आदि विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है। यह पर्व विभिन्न दार्शनिक, धार्मिक, सामाजिक विषयों को अपने में समेटे हुए है। यह सारा उपदेश भीष्म शरशैय्या पर लेटे हुए युधिष्ठिर को प्रदान करते हैं।

अनुशासन पर्व– यह पर्व दो उपपर्वों तथा 168 अध्याय में विभक्त है। इस पर्व की विषयवस्तु शान्ति पर्व के समकक्ष ही है। भीष्म का स्वर्गारोहण इसी पर्व में होता है।

आश्वमेधिक पर्व– यह पर्व 92 अध्यायों में विभक्त है। इसमें मुधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध यज्ञ किये जाने का वर्णन है।

आश्रमवासिक पर्व– इस पर्व में 38 उपपर्व तथा 39 अध्याय हैं। इसमें धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती तथा विदुर आदि के वनगमन एवं उनका वानप्रस्थ जीवन जीने का वर्णन है।

मौसल पर्व– इस पर्व में आठ अध्याय हैं। यह पर्व अत्यन्त संक्षिप्त है। इस पर्व में गान्धारी के प्रभाव से यदुवंशियों का समूलनाश हो जाता है, कृष्ण भी एक व्याघ्र द्वारा मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

महाप्रस्थानिक पर्य– यह पर्व अत्यन्त लघुकाय है। इसमें मात्र तीन अध्याय हैं। इस पर्व में पांडवों की हिमालय यात्रा का वर्णन है।

स्वर्गारोहण पर्व– यह पर्व पाँच अध्यायों में विभक्त है। इसमें युधिष्ठिर सहित पाण्डवों के स्वर्गगमन वृत्तान्तों का वर्णन है। इसके अन्तिम अध्याय में महाभारत का माहात्म्य भी वर्णित है। इसे महाभारत का सार भी कहा जाता है।

27.3.3 महाभारत का रचनाकाल : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

महाभारत की ऐतिहासिकता का विश्लेषण करते समय यह आवश्यक है कि महाभारत के रचनाकाल पर भी विशेष विचार किया जाये।

किसी भी ग्रन्थ के रचनाकाल को निर्धारित करने की एक विशिष्ट वैज्ञानिक पद्धति निश्चित की गई है, जिसके आधार पर किसी एक उपयुक्त निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता मिलती है। सटीक तथ्यों के अभाव में भले ही एक निश्चित काल भले ही निर्धारित न किया जा सके परन्तु पूर्वसीमा एवं उत्तरसीमा के आधार पर विशेष काल अवधि अवश्य चिन्हित की जा सकती हैं।

महाभारत के रचनाकाल को जानने के लिए जब संस्कृत वाङ्मय पर दृष्टिपात करते हैं तो अनेक प्रकार की सामग्री उपलब्ध होती है जो महाभारत के रचनाकाल की पूर्व एवं उत्तरसीमा को निर्धारित करने में सहायक सिद्ध होती है।

अग्रिम चर्चा आरम्भ करने से पहले यह कहना आवश्यक है कि पूर्व में महाभारत के रचनाक्रम को विस्तार से बतलाते हुए यह स्पष्ट किया जा चुका है कि जय तथा भारत की यात्रा पूरी करते हुए महाभारत इस स्वरूप को प्राप्त कर पाया है, अतः रचनाकाल सम्बन्धी प्रमाणों को भी इसी दृष्टि से देखने की आवश्यकता है। उसके बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना उचित होगा।

संस्कृत नाट्यकारों में सबसे प्राचीनतम ज्ञात नाटककार भास हैं, जिन्होंने अपने कतिपय रूपक महाभारत को ही आधार बनाकर लिखे हैं। यद्यपि भास के काल को लेकर विद्वानों में मतभिन्नता है तथापि यह कहा जा सकता है कि पाश्चात्य विद्वान् प्रायशः 300 ई. पू. तक भास का समय मानते हैं। इससे प्रतीत होता है कि भास के समय महाभारत अपने वर्तमान स्वरूप में अथवा निर्माण प्रक्रिया में अवश्य विद्यमान रहा होगा एवं जन सामान्य में अत्यन्त लोकप्रिय हो चुका होगा।

बौधायन गृह्यसूत्र में अनुशासन पर्व के एक अंश विष्णुसहस्रनाम का उल्लेख है। इस गृह्यसूत्र का समय विद्वानों ने 400 ई. पू. निश्चित किया है। जिससे प्रतीत हांता है कि 400 ई. पू. में महाभारत की रचना हो चुकी होगी तथा महाभारत के पर्याप्त अंश विद्वत् जगत् में सहजता से उपलब्ध थे।

महाभारत के रचनाकाल के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रमाण आश्वालायन गृह्यसूत्र में प्राप्त होता है, जो कि मैक्डानल के अनुसार बौधायन गृह्यसूत्र से प्राचीन 5वीं शताब्दी ई. पू. की रचना मानी जाती है।

आश्वलायन गृह्यसूत्र में भारत तथा महाभारत इन दोनों का पृथक्–पृथक् संहिताओं के रूप में उल्लेख प्राप्त होता है– सुमन्तु–जैमिनि–वैशम्पायन–पैलसूत्र –भारत–महाभारत– धर्माचार्यः (आश्वलायन गृह्यह्यसूत्र– 3/4/4)

आश्वलायन गृह्यसूत्र के प्रमाण से यह भी तथ्य प्रकाश में आता है कि 5वीं शताब्दी ई. पू. महाभारत अपने विशिष्ट विकसित क्रम को प्राप्त कर चुका था अथवा विकासमान

अवस्था में था। इतिहासकारों का दृढ़ मत है कि महाभारत के वर्तमान स्वरूप की कालसीमा निश्चित रूप से बौद्ध धर्म की उत्पत्ति तथा विस्तार के रूप में मानी जा सकती है। महाभारत में स्पष्टतः बौद्ध धर्म सम्बन्धित अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। महाभारत में यवनों का भी उल्लेख है जिससे यह कालसीमा सिमटकर 320 ई.पू. से लेकर ई. शताब्दी तक आ जाती है। ऐसा अनुमान व्यक्त किया जाता है कि उक्त कालखण्ड में महाभारत अपने वर्तमान स्वरूप का प्राप्त कर चुका था।

महाभारत का उल्लेख एक यूनान के लेखक दियो क्रिसोस्तोम (Dio Chrysostom) ने भी किया है। इनका कथन है कि भारत में एक लाख श्लोकों का 'इलियट' प्रचलित था। यहां निश्चित रूप से 'इलियट' से उनका अभिप्राय 'शतसाहस्री' महाभारत से ही था।

वस्तुतः इलियट एक यूनानी काव्य है जिसमें वीर योद्धाओं की गाथाएँ हैं। यहां पर दो बातें विशेष तौर पर ध्यातव्य है प्रथम तो दियो क्रिसोस्तोम प्रायशः 5वीं ईस्वी में भारत के दक्षिण प्रदेश में आया था और दूसरी प्रमुखतः उत्तर भारत की घटनाओं को समेटने वाला महाभारत उस समय तक अपने वर्तमान स्वरूप में दक्षिण भारत की यात्रा कर चुका था। जिससे यह पुष्ट होता है कि ईस्वी सन् से पूर्व ही निश्चित तौर पर महाभारत अपने पूर्ण स्वरूप को प्राप्त कर चुका था एवं जनमानस में व्याप्त भी हो चुका था।

इसी क्रम में कुछ अन्य प्रमाण भी दृष्टिगत होते हैं जो महाभारत की ऐतिहासिकता की समीक्षा में सहायक सिद्ध होते हैं।

पांचवीं शताब्दी के अनेक ऐसे दानपात्र प्राप्त होते हैं। जिनमें महाभारत को धर्मशास्त्र मानकर उद्धृत किया गया है। 1445 ई. में गुप्तकालीन अभिलेख में 'शतसाहस्री संहिता' कहा गया है। अन्यत्र कतिपय दानपात्रों में 'शतसाहस्रयां संहितायां वेदव्यासेनोक्तम्' इस प्रकार का महाभारत सम्बन्धी स्पष्ट उल्लेख है। कम्बोज प्रदेश (कम्पूचिया) में 600 ई. का एक अभिलेख प्राप्त होता है जिसमें रामायण, महाभारत की प्रतिलिपियों को उपहार में देने का विवरण है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि छठी शताब्दी तक महाभारत की यात्रा भारतवर्ष की सीमाओं से बाहर तक जा चुकी थी।

संरस्कृत के प्रख्यात गद्यकार सुबन्धु (छटी शताब्दी) तथा बाणभट्ट (सातवीं शताब्दी) ने अपनी रचनाओं में पर्याप्त मात्रा में महाभारत के पात्रों तथा आख्यानों का उल्लेख किया है। शंकराचार्य (आठवीं शताब्दी) महाभारत को स्त्रियों तथा शूद्रों की स्मृति कहते हैं।

महाभारत के रचनाकाल के सन्दर्भ में समस्त तथ्यों के विश्लेषण के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार से महाभारत का संरचनात्मक विकासक्रम है उसी प्रकार उसका रचनात्मक कालक्रम भी मानना चाहिए। महाभारत की रचना का किसी एक प्रमाण विशेष के आलोक में कोई एक निश्चित नहीं किया सकता। महाभारत का मूल रूप प्रायशः 800 ई. पू. अस्तित्व में आ चुका होगा तदनन्तर 100–200 वर्ष पश्चात् 500 ई. पू. पर्यन्त भारत तथा इसके पश्चात् प्रायशः 200 ई. पू. से पहले ही महाभारत अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर चुका होगा।

यद्यपि पाश्चात्य विद्वानों एवं भारतीय विद्वानों में इस विषय में मतभेद हैं फिर भी आश्वलायन, बौधायन, गृह्यसूत्र आदि के प्रमाण तथा अन्य अवान्तर प्रमाण महाभारत को ई.पू. की रचना सिद्ध करते हैं।

27.3.4 महाभारतकालीन स्थलों की ऐतिहासिक समीक्षा

महाभारत के समग्र अध्ययन से एक तथ्य विशेषरूप से ध्यान आकृष्ट करता है वह है महाभारत में वर्णित विस्तृत भूभाग का सूक्ष्मता से वर्णन। वस्तुतः महाभारत की ऐतिहासिकता को प्रमाणित करने में विस्तृत भू भाग का नाम दिशा–स्थिति पूर्वक सूक्ष्म विवेचन अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। यदि महाभारत की घटनाएं कल्पनामात्र होती तो लेखक एक सीमित दायरे में, सीमित भूभाग में अथवा काल्पनिक स्थानों का सहारा लेकर अपनी कथा को आकार दे सकता था। परन्तु लेखक ने ऐसा न कर यथावत विद्यमान स्थानों का निर्देश किया है। अग्रिम चर्चा में यह सिद्ध किया जायेगा कि महाभारत में उल्लिखित स्थल उसी स्थान पर, उसी दिशा में विद्यमान हैं तथा उन्हीं नामों अथवा अन्य नामों से जाने जाते हैं।

उक्त तथ्यों को प्रमाणित करने के लिए महाभारत के परवर्ती ग्रन्थों से भी पर्याप्त सहायता मिलती है। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि महाभारत की मूल कथा मात्र काल्पनिक नहीं अपितु भारत के सुदूर अतीत का इतिहास भी है और अभिन्न अंग भी। अब यहां पर कतिपय विशेष स्थलों का विवरण देते हुए महाभारत की ऐतिहासिकता का प्रतिपादन करने का प्रयास किया जायेगा।

हस्तिनापुर– महाभारत के सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में हस्तिनापुर वर्णित है। महाभारत मे हस्तिनापुर को विकसित करने का वर्णन करते हुए कहा गया है कि राजा सुहोत्र तथा इक्ष्वाकु कुल की कन्या सुवर्णा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र हस्ती ने हस्तिनापुर बसाया–

सुहोत्रः खल्विक्ष्वाकु कन्यामुपयेमे सुवर्णां नाम तस्यामस्य जज्ञे हस्ती।
य इदं हस्तिनपुरं स्थापयामास एतदस्य हस्तिनपुरत्वम्।।[11]

कुरुवंशियों ने हस्तिनापुर को अपनी राजधानी बनाकर अनेकों पीढियों तक यहां पर शासन किया। हस्तिनापुर एक समृद्ध वैभवशाली नगर रहा जहां उन्नत खेती होती थी। महाभारत में हस्तिनापुर को सभी नगरों में श्रेष्ठ नगरी कहा गया है–

देशानां कुरूजाङ्गलम्।[12]

ए. एल. बाशम ने अपनी पुस्तक अद्भुत भारत में कहा है कि यह अत्यन्त विशाल नगर 48 योजन तक विस्तृत था। यह नगर गंगा के पश्चिमी किनारे पर स्थित था। वर्तमान के मवाना, बहारमा, बक्सर, परीक्षितगढ़ तथा गढ़मुक्तेश्वर प्रमुख थे।[13]

सैनी ग्राम सेना का द्वार था, पूठगांव राजकुमारों के भ्रमण विहार का स्थान था, गजपुर मे हाथियों का स्थान कस्बा खरखौदा तथा अश्वों का अस्तबल था। वर्तमान में हस्तिनापुर नगर मेरठ से 22 मील उत्तर–पूर्व प्राचीन गंगा की धारा के किनारे बसा हुआ है। महाभारत के समय हस्तिनापुर भी उत्तरी सीमा शुकताल (जिला मुजफ्फर नगर), दक्षिणी सीमा वारणावत (वर्तमान बरनावा) थी। मेरठ से 15 मील उत्तर स्थित मवाना को हस्तिनापुर का मुख्य द्वार माना जाता था।[14] महाभारत के घटनाक्रम की

[11] म. भा. आदिपर्व 1.95.34
[12] म. भा. आदिपर्व 1.108.24
[13] अद्भुत भारत, पृ. 438, ए. एल. बाशम
[14] हस्तिनापुर, शिक्षा विभाग, उत्तरप्रदेश पृ. 2

दृष्टि से हस्तिनापुर एक महत्वपूर्ण केन्द्र था, जिसकी स्थिति आज भी उपलब्ध है, इससे यह भी स्पष्ट होता है कि महाभारत का हस्तिनापुर काल्पनिक नहीं माना जा सकता।

इन्द्रप्रस्थ नगर– महाभारत में जब कौरव–पाण्डवों के बीच मतभेद बढ़ने लगा तो धृतराष्ट्र में राज्य का बंटवारा कर इस पारिवारिक कलह को शान्त करने का प्रयास किया।

पाण्डवों को हस्तिनापुर से अलग इन्द्रप्रस्थ नगर राज्य करने के लिए दिया जो खाण्डवप्रस्थ के नाम से विख्यात एक भयंकर वन के रूप में स्थित था। युधिष्ठिर से पहले भी पुरुरवा, नहुष, ययाति आदि राजाओं ने खाण्डवप्रस्थ पर राज्य किया था। खाण्डवप्रस्थ को कौरवों की राजधानी भी कहा जाता था। इन्द्रप्रस्थ की अवस्थिति का भी विस्तृत विश्लेषण आवश्यक है।

वर्तमानयुगीन दिल्ली को ही महाभारतकालीन इन्द्रप्रस्थ माना गया है। दिल्ली के राजघाट से लेकर पाण्डवों के किले तक का भाग इन्द्रप्रस्थ सभाभवन था, पुराना किला जो दिल्ली में यमुना नदी के किनारे स्थित है। विश्लेषण करते हैं तो यह भी ध्यान में आता है कि वर्तमान जो पुराना किला है, यहां भी इन्द्रप्रस्थ के होने की सम्भावना है क्योंकि पुराने किले में विभिन्न स्थानों पर शिलालेख पटों पर इन्द्रप्रस्थ की चर्चा की गई है। इतिहासकारों के अनुसार पूर्व ऐतिहासिक काल में जिस स्थल पर इन्द्रप्रस्थ बसा था, उसके ऊंचे टीले पर 16वीं शताब्दी में पुराना किला बना था।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस किले की कई स्तरों पर खुदाई करने पर भूरे रंग के मिट्टी के बर्तनों के अवशेष मिले हैं, जो महाभारतकालीन स्थलों से मेल खाते हैं। इन्द्रप्रस्थ का अपभ्रंश इन्द्रपरत नाम का गांव 20वीं शताब्दी के आरम्भ तक पुराने किले में स्थित था।

महाभारत में वर्णित हस्तिनापुर की ही भांति इन्द्रप्रस्थ की अवस्थिति को अनेक उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर चिन्हित करने में सफलता प्राप्त होती है, जो कि महाभारत की ऐतिहासिकता को प्रमाणित करने में सहायक सिद्ध होती है।

हस्तिनापुर एवं इन्द्रप्रस्थ ये दोनों केन्द्र महाभारत में घटित घटनाओं की दृष्टि से अत्यन्त प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण रहे हैं, जिनकी भौगोलिक स्थिति को परखना तथा पुष्ट करना आवश्यक था।

अब हम महाभारत में वर्णित अन्य स्थलों की अवस्थिति की भी संक्षेप में समीक्षा करने का प्रयास करेंगे।

मद्र– महाभारत में मद्र देश का वर्णन प्राप्त होता है। मद्र देश के राजा शल्य थे, जिनकी बहन माद्री का विवाह हस्तिनापुर राजा पाण्डु के साथ हुआ था। मद्र देश प्राचीन वाहीक (पंजाब) का उत्तरी भाग था। इसकी राजधानी शाकल (वर्तमान स्यालकोट) थी, जो आपगा (वर्तमान अयक) नदी पर स्थित है। यह छोटी नदी जम्मू की पहाड़ियाँ से निकलकर स्यालकोट के पास से होती हुई वर्षा ऋतु में चिनाब में मिलती है।[15]

[15] प्राचीन भारतीय भूगोल, कनिंघम, पृ 212

पाणिनीय अष्टाध्यायी में भी 'दिशोऽमद्राणाम्' (अष्टा 4.2.108) सूत्र पर इस बात का संकेत मिलता है कि मद्रदेश के दो भाग थे पूर्वमद्र एवं अपरमद्र। मानचित्र देखने से पता चलता है कि पूर्वमद्र रावी नदी से चिनाब नदी तक तथा पश्चिमी मद्र चिनाब नदी से झेलम नदी तक का प्रदेश होना चाहिए। शाकल या स्यालकोट पूर्वी मद्र में ही होना चाहिए।

पांचाल प्रदेश– महाभारत में पांचाल प्रदेश का वर्णन प्राप्त होता है। जिसके राजा द्रुपद थे, द्रोपदी इन्हीं की पुत्री थी। पांचाल क्षेत्र हिमालय के भाभर क्षेत्र से लेकर दक्षिण में चर्मण्वती नदी के उत्तरी तट के बीच मैदानों में फैला हुआ था। किन्हीं कारणों से पांचाल के दो भाग हो गये, जिसमें उत्तर पांचाल हिमालय से लेकर गंगा के उत्तरी तट तक था तथा उसकी राजधानी अहिछत्र थी तथा दक्षिण पांचाल गंगा के दक्षिणी तट से लेकर चर्मण्वती तक था जिसकी राजधानी काम्पिल्य (वर्तमान फर्रुखाबाद) थी।[16]

सिंधु देश– महाभारत में दुर्योधन की बहन दुःशला का पति जयद्रथ सिंधु नरेश के रूप में उल्लिखित है। सिंधु नरेश जयद्रथ की भी महाभारत में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थी।

सिंधु देश की स्थिति सिंधु नदी के पूर्व में सिंधु सागर दुआब को कहा जाता है, यह वर्तमान में पाकिस्तान में है। काशिका में 7.3.19 (ह्रद्भग सिन्ध्यन्ते पूर्वपदस्य च) सूत्र पर सक्तु सिधु एवं पान सिन्धु इन दो भागों का उल्लेख किया है, उल्लेखनीय है कि उत्तरी सिन्धु दुआब में जिला डेटा इस्माइल खां की तरफ आज भी सत्तू लोकप्रिय खाद्य है।

वस्तुतः यह विभाजन खान–पान की रुचि के आधार पर रहा होगा। महाभारत में जयद्रथ को क्षीरान्न भोजी कहा है। क्षीर भोजन दक्षिण सिन्धु की विशेषता समझा जाता था, सम्भवतः जयद्रथ भी दक्षिण सिन्धु देश का राजा रहा हो।

त्रिगर्त– महाभारत में त्रिगर्त देश के राजा सुशर्मा का वर्णन है। अभिमन्यु वध के दिन त्रिगर्त देश के राजा ही थे, जो अर्जुन को युद्धभूमि से दूर ले गये थे। रावी, व्यास एवं सतलुज इन तीन नदी–दूनों के बीच का प्रदेश ही त्रिगर्त प्रदेश कहलाता था। यह पश्चिमी हिमालय की तलहटी में शिवालिक से होते हुए जालंधर तक के मैदानी भूभाग में फैला हुआ था।

विराट नगर– महाभारत में जब पाण्डवों को अपना अज्ञातवास पूरा करना था तो उन्होंने विराट नगर में ही शरण ली थी।

अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का विवाह भी विराट नरेश की पुत्री उत्तरा के साथ हुआ था। इन कारणों से विराट नगर भी महाभारत की घटनाओं का प्रमुख केन्द्र बिन्दु रहा है। यह तत्कालीन मत्स्य देश की राजधानी माना जाता था। विद्वानों के अनुसार वर्तमान विराट नगर ही महाभारतकालीन विराट नगर कहा जाता था।

विराट वर्तमान में जयपुर के निकट एक स्थान है, यह स्थान अरावली की पहाडियों के मध्य में अवस्थित है इसी प्रकार महाभारत में वर्णित द्वारका, मथुरा आदि स्थानों का भी प्रचुर मात्रा में वर्णन प्राप्त होता है जो कि आज भी अपने उन्हीं नामों से लोकविदित है।

[16] प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 112, डॉ. रतिभानु सिंह

इस पूरी चर्चा में कुछ स्थानविशेषों का विश्लेषण प्रस्तुत कर यह बतलाने का प्रयास किया गया है कि महाभारत का घटनाक्रम तत्कालीन भारतवर्ष के अनेक स्थानों पर स्वभाविक रूप में घटित हुआ है न कि काल्पनिकता या कृत्रिम आधार पर। अतएव उन–उन स्थानों को अवस्थिति आज भी पहचानी सकती है, जो कि पूर्णतः प्रासंगिक भी है। यह समग्र चर्चा– महाभारत की ऐतिहासिकता की समीक्षा में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है।

27.3.5 विभिन्न ग्रन्थों में महाभारत के उद्धरण एवं महाभारत का उपजीव्यत्व

महाभारत का अपने रचना काल से ही भारतीय साहित्य एवं समाज पर गहरा प्रभाव रहा है। इसकी व्यापकता इसी बात से पता चलती है कि भारतीय वाङ्मय में अनेक ग्रन्थकारों ने महाभारत के पात्रों अथवा कथानक को उद्धृत किया है तथा अनेक कवियों ने महाभारत का आश्रय लेकर अपने काव्यों का प्रणयन किया है।

प्रस्तुत चर्चा में कतिपय ऐसे ग्रन्थ उद्धृत किये जायेंगे जिन्होंने अनेक स्थानों पर महाभारत को प्रमाण रूप में उपस्थित किया एवं ऐसे कवियों की भी चर्चा की जाएगी जिन्होंने अपने अपने पूरे काव्य को महाभारत से प्रभावित होकर लिखा।

इस समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जायेगा कि महाभारत को मात्र किंवदन्ती अथवा काल्पनिक मानना सही नहीं होगा अपितु वह एक ऐसी घटना थी जिसने बहुत गहरे तक भारतीय जनमानस को प्रभावित किया था तथा बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक जगत् में व्यापक स्वीकृति भी प्राप्त की थी।

27.3.5.1 प्राचीन ग्रन्थकारों द्वारा उद्धृत महाभारत

वैदिक साहित्य के प्रमुख अंग ऐतरेय ब्राह्मण में परीक्षित के पुत्र जनमेजय का स्पष्ट तौर पर उल्लेख प्राप्त होता है– स्तेन ह वा ऐन्द्रेण महाभिषेकेण तुरः कावषेयो जनमेजयम् परिक्षितम् अभिषिषेच, तस्मादु जनमेजयः परिक्षितः समन्तम् सर्वतः पृथिवीम् जयन् परीयामाश्वेन च मध्येनेजे।[17] इसका अभिप्राय है कि कवष के पुत्र तुर ने परीक्षित पुत्र जनमेजय का अभिषेक ऐन्द्र नामक उस पद्धति से किया जो सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। परिणामस्वरूप परिक्षित पुत्र जनमेजय ने समस्त पृथ्वी पर विजय प्राप्त की और अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किया। यहां स्पष्ट रूप से परीक्षित और जनमेजय को पिता पुत्र के रूप में ही दर्शाया है जैसा कि महाभारत मे वर्णित है। ऐतरेय ब्राह्मण में इस तरह के अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं।

बृहदारण्यक उपनिषद्– बृहदारण्यक उपनिषद् में भी अनेक स्थलों में महाभारत के पात्रों का यथावत उल्लेख प्राप्त होता है। यहां पर कतिपय चयनित स्थल उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

अथैनम ब्रुवम् क्व पारिक्षिता अभवन्निति, क्व पारिक्षित अभवन् स त्वा पृच्छामि याज्ञवल्क्य, क्व पारिक्षिता अभवन्निति।

स होवाच वै सः अगच्छन्वै ते तद्यत्राश्व–मेधयाजिनो गच्छन्तीति।[18]

[17] ऋग्वेद का एतरेय ब्राह्मण, पृ. 1300, सुधाकर मालवीय

[18] बृहदारण्यकोपनिषद् अ. उ/ ब्र. उ/ पृ. 691–692, गीताप्रेस गोरखपुर

इस पूरे संवाद का सार यह है कि सम्राट् जनक के यज्ञ करने के उपरान्त जब दक्षिणा की चर्चा आयी तो जनक ने पहले सबसे श्रेष्ठ कौन है यह जिज्ञासा प्रकट की। वहां उपस्थित लोगों ने याज्ञवल्क्य ऋषि की तरफ संकेत किया।

तब उन्होंने याज्ञवल्क्य से पूछा कि परीक्षित के वंशज कहाँ गये? याज्ञवल्क्य ने इसका उत्तर देते हुए कहा कि जहां अश्वमेध यज्ञ करने वाले जाते हैं वहीं परीक्षित के वंशज भी चले गये अर्थात् अश्वमेध यज्ञ का जो फल होता वह उन्हें सद्गति के रूप में प्राप्त हो गया। इस संवाद से यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है कि यहां पर पांडवों के कुल के परीक्षित की ही चर्चा है, उनके कृत्यों के बारे मे सर्वजन सुलभ जनकारी उपलब्ध थी।

अष्टाध्यायी– पाणिनिकृत अष्टाध्यायी विश्व में अत्यन्त प्रतिष्ठित व समादृत है। पाणिनि ने तत्कालीन भाषा का एक अत्यन्त व्यवस्थित विवेचन अष्टाध्यायी में प्रस्तुत किया है, जिसकी सभी विद्वान् मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं।

अष्टाध्यायी में न केवल तत्कालीन भाषा का अपितु तत्कालीन समाज, संस्कृति, भूगोल, लोकाचार एवं परम्पराओं का निदर्शन प्राप्त होता है। अष्टाध्यायी में भी महाभारत के कुछ पात्रों, स्थलों का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है। जिससे उनकी तत्कालीन समाज में व्यापकता एवं स्वीकृति का बोध होता है।

यहां पर 'वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन्' (अष्टा–4.3.98) इस सूत्र उल्लेख करना पर्याप्त होगा जिसमें वासुदेव और अर्जुन शब्दों का संकेत प्राप्त होता है। पाणिनि का सर्वस्वीकृत समय 500 ई.पू. के आसपास माना जाता है। उस समय वासुदेव के पुत्र कृष्ण (वासुदेव) तथा अर्जुन सम्यक् रूप से लोकविदित थे। चूंकि ये दोनों महाभारत की कथा के प्रमुख पात्र थे इसलिए महाभारत महाकाव्य को ऐतिहासिक आधार भी मिल जाता है।

अर्थशास्त्र– अर्थशास्त्र प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कौटिल्य की रचना है। कौटिल्य ने नन्दवंश का समूल नाश कर चन्द्रगुप्त मौर्य को सिंहासन पर बैठाया था। कौटिल्य का समय प्रायः चतुर्थ ई. पू. स्वीकार किया जाता है।

अर्थशास्त्र शासन–विधि तथा तत्सम्बन्धित विषयों की एक महान् कृति है, इसमें कर्मकाण्ड, कथा, आख्यान आदि विषयों को स्पर्श नहीं किया गया है। अर्थशास्त्र न केवल नीतिगत दृष्टि से अपितु ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अर्थशास्त्र में एक स्थान पर विभिन्न कारणों से नाश को प्राप्त होने वालों की चर्चा करते हुए वर्णन आता है कि 'कोषाज्जनमेजयो ब्राह्मणेषु'[19]

अर्थात् जनमेजय को ब्राह्मणों के प्रति अपने क्रोधपूर्ण व्यवहार के कारण बहुत कष्ट झेलना पड़ा। इसी प्रसंग में 'दुर्योधनो राज्यादशंम्'[20]

यह वर्णन भी आता है, जिसका अभिप्राय है कि दुर्योधन को राज्य का अंश न छोड़ने की वजह से काफी कष्ट झेलना पड़ा।

[19] अर्थशास्त्र अधि. 1, अध्याय 5
[20] वही

यहां पर दुर्योधन एवं जनमेजय महाभारत में वर्णित पात्र ही हैं । यह महाभारत की ऐतिहासिकता की पुष्टि में भी महत्वपूर्ण तथ्य है, जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उपर्युक्त चर्चा में इस प्रकार के कतिपय ग्रन्थों को उद्धृत किया गया जिनमें महाभारत के पात्रों का स्पष्ट उल्लेख है। ई.पू. शताब्दी के ग्रन्थकार जिस प्रकार से महाभारत के उल्लेख कर रहे हैं इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस समय तक महाभारत ने बौद्धिक जगत् तथा जन सामान्य में इतने बड़े स्तर पर अपना स्थान बना लिया था। जैसे वह किसी एक व्यक्ति के मस्तिक की उपज न होकर कुछ समय पूर्व में घटित घटनाएं ही थी।

अब महाभारत के परवर्ती साहित्य पर प्रभाव एवं उसकी लोकप्रियता को दर्शाने के लिए ऐसे साहित्य की चर्चा करेंगे जिनमें महाभारत के कथानक अथवा पात्रों को आधार बनाकर ग्रन्थकार ने अपने ग्रन्थ को आकार दिया।

भास ने महाभारत को आधार बनाकर अपने कई रूपकों की रचना की है जैसे दूत घटोत्कचम्, दूतवाक्यम्, कर्णभारम् मध्यमव्यायोग पञ्चरात्रम् तथा उरुभङ्गम् आदि।

रूपकों की ही दृष्टि से कालिदास ने अभिज्ञानशाकुन्तलम्, भट्टनायक ने वेणीसंहारम् तथा राजशेखर ने बालभारतम् की रचना की है। इसी प्रकार अनेक महाकाव्य भी महाभारत को आधार बनाकर लिखे गये जैसे भारवि का किरातार्जुनीयम्, माघ का शिशुपालवधम्, क्षेमेन्द्र का भारतमञ्जरी, श्रीहर्ष का नैषधचरितम्, अमरचन्द्र सूरि की बालभारतम् तथा धनञ्जय का राघव पाण्डवीयम् महाभारत को आश्रय बनाकर त्रिविक्रमभट्ट ने नलचम्पू तथा अवन्त भट्ट ने भारत चम्पू की रचना की है।

संस्कृत के लब्धप्रतिष्ठ कवियों द्वारा महाभारत को आश्रय बनाकर इतने बड़े स्तर पर काव्य रचना की गई जिससे यह स्पष्ट तौर पर परिलक्षित होता है कि महाभारत की घटनाओं ने भारतीय जनमानस पर एक अमिट छाप अंकित की तथा यह कालजयी ग्रन्थ भारतीय परम्परा का एक अभिन्न अङ्ग बन गया।

27.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई का विषय अत्यन्त रोचक है। महाभारत के विविध पक्षों पर विस्तृत चिन्तन साहित्य जगत् में होता रहा है परन्तु महाभारत की ऐतिहासिकता जैसे विषयों पर कम ही विचार किया जाता रहा है।

उपर्युक्त विवरण में भारतीय परम्परा में महाभारत का महत्त्व, महाभारत की विषयगत दृष्टि से व्यापकता, महाभारत के प्रमुख प्रतिपाद्य तथा भारतीय पारम्परिक दृष्टि से इतिहास बोध पर प्रकाश डाला गया है।

महाभारत के वर्तमान स्वरूप में जो नाग, गन्धर्व, यक्ष आदि की गाथाएं पुराण की श्रेणी में तथा कुरुवंशी योद्धाओं की गाथा इतिहास की श्रेणी में रखी जा सकती है। अलौकिक घटनाओं से भौतिक जगत् ही प्रत्यक्ष घटनाओं की यात्रा ही पुराण से इतिहास तक की यात्रा है। इस पूरे विषय का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत इकाई में किया गया है जिससे विद्यार्थी भारतीय परम्परा की दृष्टि से पुराण एवं इतिहास का भेद समझ सके।

महाभारत की ऐतिहासिकता को स्पष्ट करते हुए स्वयं व्यास के वचनों को उद्धृत करते हुए बतलाया गया कि महाभारत में भारतवंशियों के पुण्य का इतिहास कहा है, कृष्ण का उदाहरण देते हुए यह दर्शाया गया है कि बुद्ध से पूर्व कृष्ण एक ऐतिहासिक व्यक्ति रहे हैं।

महाभारत के स्वरूप एवं रचनाक्रम पर विस्तार से विचार करते हुए यह प्रतिपादित किया कि महाभारत का संरचनात्मक विकास 'जय', 'भारत' तथा 'महाभारत' इस रूप में हुआ है। आरम्भ में व्यास ने जय की रचना की जिसमें 8800 श्लोक थे, महाभारत के इस आरम्भिक नाम की पुष्टि स्वयं महाभारत में थी की गई है। 'जय' के बाद भारत तथा भारत के बाद महाभारत इस एक लाख श्लोकों वाले महाभारत की उपलब्धता होती है। महाभारत के नामकरण के पीछे एक कारण उसका विशाल स्वरूप वाला होना भी है। महाभारत के सभी अठारह पर्वों का उनकी विशिष्ट घटनाओं के साथ एक संक्षिप्त वर्णन भी प्रस्तुत किया गया है।

महाभारत के रचनाकाल का ऐतिहासिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। जिसमें कालनिर्धारिण के वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर पूर्व सीमा तथा उत्तर सीमा को निश्चित करने का प्रयास किया गया है।

उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महाभारत का मूलरूप 'जय' 800 ई.पू. तक अस्तित्व में आ चुका होगा, भारत 500 ई.पू. तक तथा महाभारत प्रायः 200 ई.पू. तक अपने वर्तमान स्वरूप में आ गया होगा।

आश्वालायन गृह्यसूत्र तथा बौधायन गृह्यसूत्र के प्रमाण उपर्युक्त तथ्यों की पुष्टि में सहायक सिद्ध होते हैं।

महाभारत की ऐतिहासिकता को एक पुष्ट आधार देने के लिए महाभारतकालीन स्थलों का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें हेतु यह है कि ग्रन्थकार को अगर अभीष्ट होता तो वह एक सीमित भूभाग अथवा काल्पनिक स्थानों को लेकर भी महाभारत की कथा का ताना–बाना बुन सकते थे। परन्तु उन्होंने तत्कालीन वास्तविक भूभाग का वर्णन किया, जो कि पूर्णतः तार्किक एवं प्रासंगिक है। महाभारत के महत्त्वपूर्ण केन्द्रबिन्दु रहे हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, मद्रदेश, त्रिगर्त, विराट नगर आदि उन्हीं नामों अथवा परिवर्तित नामों से पहचाने जा सकते हैं। जो महाभारत की ऐतिहासिकता को पुष्ट करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

इसके पश्चात् प्राचीन ग्रन्थकारों द्वारा यत्र–तत्र अपने ग्रंथों में महाभारत के कथानक अथवा उसके पात्रों को उद्धृत किया है, इसके आधार पर भी महाभारत की अत्यन्त प्राचीन काल में सहज प्रसिद्धि, लोकप्रियता तथा उसे यथावत् आत्मसात् करने से यह तथ्य ध्यान में आता है कि कहीं कहीं महाभारत की घटनाएं किसी न किसी रूप में घटित हुई होंगी तभी इतने बड़े स्तर पर महाभारत की स्वीकृति बन पाई थी। महाभारत को आधार बनाकर लिखे गए साहित्यिक ग्रन्थों का भी एक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। इस सम्पूर्ण चर्चा में महाभारत की ऐतिहासिकता से सम्बद्ध विविध पक्षों का प्रतिपादन किया गया है।

27.5 शब्दावली

आर्ष काव्य – ऋषिकृत काव्य
प्रणेता – रचनाकार
आदृत – सम्मानित
शतसाहस्री – एक लाख संख्या से युक्त
जिज्ञासा – जानने की इच्छा
संवाद – बातचीत
काल्पनिक – कल्पना युक्त
सम्मिश्रण – मिलावट
साक्ष्य – प्रमाण
परवर्ती – बाद वाले

27.6 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. महाभारत के रचनाकार कौन हैं?
2. महाभारत का रचनाक्रम क्या है?
3. जय संहिता में कितने श्लोक थे?
4. महाभारत को शतसाहस्री क्यों कहा जाता है?
5. 'भारत संहिता' का रचनाकाल क्या माना जाता है?
6. विराट्नगर वर्तमान में कहां सम्भावित है?
7. महाभारत पर आश्रित भास के किसी रुपक का नाम बताइये।
8. जनमेजय के पिता का नाम क्या था?
9. अष्टाध्यायी में किस सूत्र में अर्जुन का नामग्रहण किया है?
10. अर्थशास्त्र में महाभारत के किन पात्रों की चर्चा है?

27.7 अभ्यास हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. वेदव्यास।
2. जय, भारत तथा महाभारत।
3. जय संहिता में 8800 श्लोक थे।
4. एक लाख श्लोक वाला ग्रन्थ होने की वजह से महाभारत को शतसाहस्री कहा जाता है।
5. प्रायशः 500 ई.पू.।
6. जयपुर के पास विराट नगर।
7. दूतघटोत्कचम्।
8. परिक्षित।

9. वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन्।
10. दुर्योधन एवं जनमेजय।

27.8 उपयोगी पुस्तकें

- महाभारत– गीता प्रेस गोरखपुर
- संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।
- महाभारत समाज संस्कृति दर्शन– डॉ. सुरेन्द्र सिंह नेगी, नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली।
- पाणिनि कालीन भारतवर्ष– वासुदेव शरण अग्रवाल, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY